

मधुमेह में नपुंसकता

- लगभग 50 प्रतिशत मधुमेही पुरुष नपुंसकता से ग्रस्त होते हैं। मधुमेह का समय बढ़ने के साथ इसकी सम्भावना बढ़ती जाती है।
- ये मानसिक तनाव, पारिवारिक तनाव व यहाँ तक कि मधुमेह के नियंत्रित न होने का बड़ा कारण बन जाता है।
- मरीज लज्जावश इस समस्या का जिक्र डॉक्टर से नहीं करते। कुछ इसे उम्र का तकाजा समझ चुप रहते हैं।
- इसका मुख्य कारण मधुमेह से होने वाली स्नायु-तंत्र की कमजोरी है।
- कुछ पुरुषों में हॉर्मोन की कमी या लिंग में खून की नलियाँ रुकना भी इसका कारण है। कुछ बी.पी. की दवाईयाँ भी इसे बढ़ा सकती हैं।
- अधिकांश रोगियों में मुँह से दी जाने वाली गोली से इसका संतोषप्रद इलाज संभव है। इन गोलियों को विशेषज्ञ की सलाह से ही लें।
- हृदय रोगी जिन्हें नाईट्रेट नामक दवाई दी जा रही है, इन गोलियों को न लें।

मधुमेह व कामेच्छा का अभाव / सेक्स अरुचि बनाम अभिशप्त मधुमेही

डायबिटीज सेंटर पर फोन आता है – “डॉ. साहब मुझे आपसे कुछ विशेष अ... पर्सनल सलाह करनी है। अम आपके क्लीनिक पर जिस समय कुछ कम भीड़ हो, आखिरी में मुझे समय दें बात बहुत जरूरी है।”

डॉक्टर के सामने बैठे मरीज की आँखों में कुछ और पूछने की इच्छा, सकुचाहट, अलग से अकेले में बात करने की इच्छा अपनी पत्नी को क्लीनिक में बाहर इंतजार करने के लिए कहना वगैरह जी हाँ इशारा नपुंसकता की ओर है।

टी.वी., मैगजीन, पोस्टरों, होर्डिंग में लुभावने व आकर्षक विज्ञापन अक्सर इस समस्या के लिए चमत्कारी औषधियाँ शर्तिया इलाज आदि के खोखले दावे होते हैं। संकोच, भय कुछ अज्ञानता वश व कुछ संस्कार वश, समाज से लुकते





होने के बावजूद इस समस्या के निदान हेतु केवल मुट्ठी भर मरीज स्पेशलिस्ट डॉक्टर से संपर्क करते हैं। सेक्स की कुंठा को खामोशी से झेलते हुए वे तनावग्रस्त जीवन व्यतीत करते हैं। मधुमेह इस रोग की जड़ का एक मुख्य हिस्सा है।

आइए एक सरसरी निगाह सामान्य रूप से लिंग की कार्य प्रणाली पर डालें। वास्तव में लिंग के उत्तेजित होने के पीछे माँसपेशियों, तंत्रिकाओं व खून की नलियों में बहाव, स्पाइनलकॉर्ड (मेरूदंड) और दिमाग का नाजुक आपसी तालमेल है। इनमें से किसी की भी कार्य क्षमता में कमी से नपुंसकता हो सकती है। अधिकांश मरीजों में सेक्स की इच्छा सामान्य रहती है पर लिंग में तनाव (Erection) नहीं आता। बार-बार की ऐसी असफलता मरीज में तनाव व डिप्रेशन पैदा करती है। आगे चलकर सेक्स में अरुचि होने लगती है।

नपुंसकता के कारण निम्न हैं :-

1. मधुमेह
2. मानसिक तनाव, कार्य की अधिकता
3. खून की नलियों में रूकावट व उच्च रक्तचाप
4. हॉर्मोन संबंधी समस्याएँ
5. बढ़ा हुआ कोलेस्ट्रॉल गुर्दे की कमजोरी
6. तंबाकू, बीड़ी, सिगरेट, शराब एवं नशीली वस्तुओं का सेवन
7. दवाईओं – जैसे उच्च रक्तचाप के लिए इस्तेमाल की जाने वाली ऐंटीनोथॉल, एंटी साइकोटिक दवाई, हारमोन ट्रीटमेंट
8. तंत्रिकाओं की कमजोरी संक्रमण ऑपरेशन, लकवा, न्यूरोपेथी।

छिपते ये मरीज नीम-हकीमों व झोलाछाप डाक्टरों के शर्तिया इलाज के झाँसे में आ जाते हैं। यह इलाज न केवल मरीज को आर्थिक हानि पहुंचता है बल्कि बीमारी के उचित इलाज के अभाव में स्थिति को गंभीर बनाता है। दर असल मधुमेह रोगी में नपुंसकता, सेक्स के लिए अनिच्छा आदि गुप्त रोग आम है एवं इनका निदान संभव है। बशर्ते आप अपनी समस्या की चर्चा डॉक्टर से निःसंकोच करें।

वर्तमान में भारत विश्व की मधुमेह राजधानी होने के साथ ही सर्वाधिक मधुमेह रोगियों का बोझ ढो रहा है। ब्लड शुगर के उतार-चढ़ाव, खान-पान एवं इलाज में अनियमितताओं के चलते समय के साथ मधुमेह रोगी अनेक जटिलताओं के शिकार हो जाते हैं।

इन्हीं में से एक जटिलता, सेक्स संबंधों में अरुचि एवं नपुंसकता है। लगभग 50 प्रतिशत (पुरुष) मधुमेही इससे प्रभावित होते हैं। विकराल रूप

नपुंसकता की पहचान एवं परीक्षण

अपनी पत्नी के साथ डॉक्टर के क्लिनिक में इसके परामर्श के लिए जाना उचित होगा। अपने डॉक्टर से इस संबंध में खुलकर चर्चा करें। इससे समस्या का निराकरण आसान होगा। साथ ही

**औरत और आदमी में मूलभूत अंतर क्या हैं?
औरत प्यार पाने के लिये सेक्स करती है,
और आदमी सेक्स पाने के लिये प्यार करता है।**

डॉक्टर के लिए टेस्ट आदि का चुनाव करना भी आसान होगा एवं आप भी अधिक टेस्टों के खर्च के बोझ से बचेंगे। मुख्य टेस्ट इस प्रकार है :-

- ब्लड शुगर, (HbA1C)
- ब्लड कालेस्ट्रॉल एवं लिपिड प्रोफाइल
- गुर्दे की जाँच
- हार्ट एवं खून की नलियों के लिए जाँचे।
- हारमोन टेस्ट

ट्रीटमेंट या इलाज : प्रत्येक मरीज की इस समस्या का इलाज भिन्न है। हर इलाज हर मरीज के लिए उपयुक्त नहीं है। इसका इलाज करते समय अनेक बातों का ख्याल रखना पड़ता है जैसे, उम्र, शुगर की स्थिति, दिल व गुर्दों की स्थिति, न्यूरोपैथी, हारमोनन्स आदि साथ भी जरूरी है कि प्रत्येक मरीज को साइको थेरेपी एवं काउंसलिंग दी जाए। नपुंसकता के चलते अधिकतर मरीज डिप्रेशन या अवसर ग्रस्त होते हैं। यदि इसका उचित निराकरण नहीं किया जाए तो मानसिक संतुलन भी खराब हो सकता है। शुरुआत में कई मरीजों को शुगर में अच्छे कंट्रोल व नियमित व्यायाम से फायदा हो सकता है।

उपलब्ध दवाईयों जैसे – बेहद प्रचलित वियाग्रा (सिल्डेनाफिल) 60 – 70 प्रतिशत मरीजों के लिए लाभप्रद है। इसे सेक्स करने के 1 घंटा पूर्व मुँह से लिया जाता है। बिना परामर्श के इसको सेवन खतरनाक साबित हो सकता है। कमजोर हृदय के मरीजों को इसका सेवन बिना परामर्श के नहीं करना चाहिए। सिरदर्द, एसीडिटी, आँखों में धुंधलापन, इसके अन्य साइड इफेक्ट हैं। वारडेनाफिल नामक नई दवाई के साथ साइडइफेक्ट कम हैं। एपो मॉरफीन के प्रयोग से उल्टी, जी मिचलनाने जैसे साइडइफेक्ट हो सकते हैं। अक्सर देखा गया है कि कुछ दिनों तक इन दवाईयों के उपयोग, मधुमेह नियंत्रण व व्यायाम से कई लोगों का आत्मविश्वास बढ़ जाता है और उनकी समस्या स्वयं ठीक हो जाती है।

टेस्टोस्टेरोन इंजेक्शन व जैली के प्रयोग से हारमोन संबंधी विकार से उत्पन्न नपुंसकता में लाभ हो सकता है। स्टेराइड बेटनेसॉल आदि का प्रयोग नीम हकीमों द्वारा अधिक किया जाता है एवं यह हानिकारक हो सकता है।

लिंग में इंजेक्शन :- जब गोलियाँ बेकार साबित होने लगती हैं तब इंजेक्शन का सहारा लिया

जाता है। फिनटोल अमीन एवं पैपावरीन नामक इंजेक्शन का प्रयोग सीधे लिंग की माँसपेशियों में किया जाता है। दर्दयुक्त इरेक्शन एवं अन्य साइड इफेक्ट की वजह से इसका प्रयोग लोकप्रिय नहीं हुआ।

इससे बहेतर विकल्प है पेशाब के रास्ते एल्प्रो स्टाडिल का उपयोग परंतु यह केवल विदेशों में उपलब्ध है।

वैक्यूम थेरेपी :- इरेक्शन करवाने के लिए इस यंत्र का उपयोग लिंग पर किया जाता है। इससे केवल कुछ ही मरीजों को लाभ मिलता है।

ऑपरेशन : उपरोक्त सभी उपायों के बेकार साबित होने पर कुछ मरीजों का इलाज ऑपरेशन द्वारा किया जा सकता है।

इलाज के अनेक विकल्प होने के बावजूद इस समस्या का निराकरण आसान नहीं है। इस रोग से बचाव ही सबसे उत्तम विकल्प है।

रोकथाम या बचाव :-

1. दिमागी संतुलन एवं तनाव रहित जीवन इस रोग के रोकथाम की मुख्य कड़ी है। पर्याप्त नींद, व्यायाम, योगाभ्यास आदि तनाव कम करने में विशेष रूप से सहायक हैं।
2. शुगर पर नियंत्रण।
3. डायबिटीज जनित डिप्रेशन या अवसाद का इलाज एवं साइकोथेरेपी।
4. स्वयं अपना इलाज करने से बचें।
5. नीम हीम एवं चमत्कारी औषधियों से परहेज करें।
6. अपने डायबेटोलॉजिस्ट या इण्डोक्राइनोलॉजिस्ट से विस्तार पूर्वक बेहिचक अपनी समस्या के बारे में चर्चा करें। साथ ही साइकोलॉजिस्ट, यूरोलॉजिस्ट, काउंसिलर से परामर्श लेने के बारे में अपने डायबेटोलॉजिस्ट से भी मार्गदर्शन ले सकते हैं।
7. अपने जैसी समस्या से ग्रस्त अन्य व्यक्तियों की मदद अवश्य करें एवं उन्हें सही राह दिखलाएँ।
8. धूम्रपान, शराब, तंबाकू एवं नशीले पदार्थों से दूरी ही रखें।
9. समस्या का इलाज थोड़ा लंबा है एवं इलाज के असर आने के लिए सब्र से इंतजार करें। डॉक्टर द्वारा बुलाने पर नियत दिन अवश्य जाएँ। ●●●